डॉ० दिलीप कुमार

जन्म तिथि : 2-1-1961

निवास : अछुआ, पालीगंज, पटना

सिच्छा : एम.ए., पी-एच. डी.

सम्प्रति : अध्यक्ष, मगही विभाग
पी०एन०के० कॉलेज, अछुआ, पालीगंज, पटना

परकासित पुस्तक :

1. कथा आलोक (मगही कहानी संकलन)
2. बदलल समाज (मगही नाटक)
3. निबंध भारती (मगही निबंध संकलन)
4. अभिनन्दन दल (मगही हाइकू संकलन)
5. रसायन के रस

सम्पादित पुस्तक :

6. कथा सौरभ (मगही कहानी संकलन)
7. कथा सागर (मगही कहानी संकलन)
8. मगही कथा सरोवर (कहानी संकलन)
9. साठी (मगही कविता संकलन)

पत्र-पत्रिका सम्पादन :

1. मगही तिमाही 'पाटलि' (सह सम्पादक)
2. मगही मासिक 'अलका मागधी' (सहायक सम्पादक)

मुखिया गाँव के परधान होवऽ हे। अब योग्य मुखिया कउन होयतन, ई तो उनकर कामे से पता चलत। ई कहानी में वर्तमान समय के राजनीति पर एगो करारा व्यंग्य कैल गेल हे। आजकल प्रजातंत्र में भी घुमा-फिरा के राजतंत्र के ही स्थापित करे के कोसिस कैल जाहे। ई व्यंग्य-कथा में ई देखावल गेल हे कि कइसे मुखिया जी चलाँकी से अप्पन व्यक्तिगत मत के जनमत बना दे हथ।

योग्य मुखिया

मुखिया पद के नोमिनेसन के दस दिन बाकी रह गेल हे। सउँसे गाँव में चुनाव के सरगर्मी बढ़ल हे। सब कोई के मुँह से एही अवाज निकलइत हे कि अबरी योग्य मुखिया के चुनाव होवे के चाही। रामाधार मिसिर अइसन हमनी के मुखिया न चाही। बाप रे ! जवाहर रोजगार योजना के कइसन लूट के रख लेलन। तीस लाख रुपइया गाँव के विकास लागी मिलल हल। अगर सही ढंग से काम होइत हल तब हमनी के गाँव तो स्वर्ग बन जाइत हल। बाकि कमीसन जादे खायल गेल आउ काम नाम ला भेल।

जब नोमिनेसन के एक दिन बाकी रह गेल तब मुखिया जी सउँसे गाँव के एगो बैठक बोला लेलन। बैठक में खचाखच लोग के देख के मुखिया जी दंग हलन। हम बड़ी बैठक बोलइली, बाकि अइसन भीड़ न देखली। बैठक रामाधार मिसिर के अध्यक्षता में सुरू भेल। मिसिर जी कहलन—'गाँव के तमाम जनता लोग ! तोहनी लोग के देन हे कि हम मुखिया बनके पाँच साल रहली। अगला चुनाव फिर होवे जा रहल हे। कल नोमिनेसन के अन्तिम दिन हे। अगर अपने लोग चाहम तब कल हम नोमिनेसन कर देम। अगर अपने लोग के राय न होयत, तब हम नोमिनेसन न करम। पाँच साल में हम्मर काम सराहनीय हे। गाँव के गली के ईंटाकरन, नली, इस्कूल के भवन, सब हमरे देन हे। हम एही चाहम कि अपने लोग कम से कम एक बार फिर हमरा मुखिया के पद पर बइठाईं, ताकि छूटल काम पूरा कर दीं। अबकी बार ग्राम-पंचायत भवन, स्वास्थ्य उपकेन्द्र के भवन आउ लइकन के खेले ला बढ़िया मैदान के जे हम्मर मन में सपना हे, ओकरा पूरा कर देम।' एही सब बात कहके मुखियाजी बइठ गेलन।

झगरू मियाँ से न रहल गेल। काहे कि झगरू मियाँ गलत बात बर्दास्त न करथ। ऊ मुँह पर सब बात कह दे हथ, चाहे तोरा दुःख लगवऽ चाहे सुख। झगरू मियाँ उठलन आउ कहे लगलन—'सुनीं मुखिया जी ! पाँच साल अपने मुखिया

रहली आउ फिर मुखिया बनेला बैठक बोलइली हे। अपने के काम आम जनता से छिपल न हे। जवाहर रोजगार योजना के पइसा लूट के रख लेली। अपने के कउन चीज के कमी हे। तइयो दिन-रात पइसा-पइसा कयले ही। अपने के सच्चाई आउ ईमानदारी से काम करे के चाहऽ हल। बाकि अइसन अपने न कइली। गली के ईंटा पाँच साल के पहिलहीं उखड़ गेल। नली के दसा अपने देखइते ही। इस्कूल के केंवाड़ी आउ खिड़की के पल्ला उलह के खतम हो गेल। छत भगवान के नाम पर टिकल हे। घोटाला करे में मुखियाजी, अपने सबसे आगे ही। गाँव के जनता के अपने मूर्ख बना के रखले ही। अपने के सब बात जनता समझ गेल हे। भलाई एही में हे कि अगिला उम्मीदवार अपने मत बनूँ। दूसर इंसान के मौका देवल जाए, जे समाज सेवा लागी अपना के समर्पित कर देलक हे।'

झगरू मियाँ के बात सुनके मुखियाजी अप्पन सफाई आम जनता के सामने रखलन। बाकि सफाई सुने लागी कोई तइयार न हल। एक्के गो अवाज आवइत हल कि हमनी के मुखिया रामाधार मिसिर न रहतन। मुखिया रामाधार मिसिर के खूब लेथारल गेल। बेचारे पानी-पानी हो गेलन। बाकि मन में सोचइत हलन कि चाहे जे होवे, जइसे होवे, मुखिया हमहीं बनीं। काहेकि जबसे रोजगार योजना सुरू हो गेल, तबसे मुखिअई आय के स्रोत हो गेल। आम जनता के बुड़बक बना देना तो हम्मर बायाँ हाथ के खेल हे। गाली-गलौज सहके पइसा कमा लेना आज के चलँकवन के खूबी हे। आम जनता हमरा मुखिया बनावे के पक्ष में न हे घर के मुखिया घरे में रहे के चाहीं। मने-मने एही सोचइत हथ मुखियाजी।

टीपन सिंह, नवल सिंह, भुनेश्वर यादव आउ मिथिलेश ठाकुर अप्पन-अप्पन भासा में मुखियाजी के खूब लेथारलन। बेचारे पानी-पानी हो गेलन, बाकि मुखिया बनेला जिद ठानले हलन।

खूब झड़इया के बाद मुखियाजी नीचे मुँह करके चुपचाप बइठल हलन। उनकर दसा देख के सरदार जी कहलन—'गाँव के भाई लोग ! आखिर में कोई के मुखिया ला समर्थन तो करले न जायत ?'

बात काटइत रामदीन सिंह कहलन— 'सरदार जी ! हमनी मुखियाजी के कोई सर्त पर वोट न देम। हमनी के मुखिया चोर-चुहाड़ न रहत। गरीब घर के ईमानदार इंसान आउ इज्जतदार रहत। जे आम जनता के चैन से रहे देत, भाई-भतीजावाद के नारा बुलन्द न करत, जात-पात आउ छुआछूत के भेदभाव न

रक्खत, ओही हमनी के मुखिया रहत। सरदार जी ! रामाधार मिसिर के मुखिया बनाके देख लेली। इनका से गाँव के कोई इन्सान खुस न हे। छुआछूत, जात-पात, भाई-भतीजावाद आउ घोटाला करे के भाव इनका में भरल पड़ल हे।'

रामदीन सिंह के भासन सुनके मुखियाजी के तरवा के लहर कपार पर चढ़ गेल। मने-मन सोचे लगलन कि एकर बदला मौका अयला पर जरूर लेम। काहे कि ई जरुरत से जादे बोलऽ हे। आम जनता के भड़कावे में एकर हाथ सबसे जादे रहऽ हे।

सरदार जी उठ के कहलन—'मुखिया जो के ईमानदारी के परिचय एक बार जरूर लेवल जाय। ई मामले में नऽ कि इनका मुखिया बनावल जाय। मुखियाजी, अपने के ई भार देवल जाइत हे कि अगला मुखिया हमनी के कउन होयत, एकरा ला कम से कम दू गो नाम अपने दीं। बाकि एगो सर्त्त हे कि भाई-भतीजावाद अपने न करम।'

सरदार जी के बात सुनके आम जनता कहलक—'ठीक हे, हमनी के अगला योग्य मुखिया के उम्मीदवार कउन रहत, से मुखिये जी तय करतन।'

रामाधार मिसिर खड़ा भेलन आउ आम जनता के सम्बोधन करइत कहलन – 'भाई लोग ! बड़ खुशी के बात हे कि अगला मुखिया के उम्मीदवार कउन रहत, ई हमरा पर लोग सौंप देलऽ हे। साथे-साथे एगो सर्त्त भी हे भाई-भतीजावाद न करे के। हम अपने लोग के बात मान लेली, बाकि अपने लोग से हम ई जानल चाहइत ही कि भाई-भतीजावाद न करके जब योग्य उम्मीदवार अपने लोग के सामने रक्खम, तब ओकर विरोध अपने लोग न न करम ?'

चारो तरफ से अवाज भेल कि हमनी विरोध न करम, ओकरे वोट देम। हमनी आम जनता वादा दे रहली हे।

रामाधार मिसिर कुछ देर तक मौन रहलन। फिर विवेक से काम निकालेलन। एगो कोना में जाके दूगो पुरजा पर योग्य उम्मीदवार के नाम लिख देलन आउ आम जनता के सामने मोड़ के रख देलन, फिर कड़क के कहलन—'गाँव के तमाम लोग ! हम भाई-भतीजावाद न कइली हे। अपने लोग के कहनानुसार हम दू गो पुरजा पर दुर्बल आउ समाज में उपेक्षित व्यक्ति के नाम लिख देली हे।' मुखियाजी के मुँह से अइसन बात सुनके लोग ताली बजावे लगलन।

सरदार जी दुन्नो पुरजा के अपने हाथ में रख के जोर-जोर से हिला के मिला देलन। फिर एगो गरीब लइका के बोलाके ओकरा में से एगो पुरजा निकाले ला कहलन।

जइसहीं लइका लॉटरी वला पुरजा सरदार जी के हाथ में रखलक, ऊ ओकरा जल्दी-जल्दी खोल के पढ़लन। पुरजा पर लिखल हल राधा देवी। जइसहीं सरदार जी पढ़लन कि चारो तरफ से हल्ला भेल कि ई तो घोर बेईमानी हे।

मुखियाजी खड़ा होके कहलन—'अपने लोग वादा से पीछे मत हटीं। अपने लोग कहली हल कि ऊ व्यक्ति दुर्बल आउ कमजोर वर्ग के होवे के चाहीं। अपनहीं लोग बताईं कि महिला से बढ़के दुर्बल आउ कमजोर ई देस में कउन हे ? राधा देवी दुर्बल आउ कमजोर महिला हे।'

मुखियाजी के बात सुनके रामदीन सिंह कहलन—'बाकि अपने घोर बेईमानी कइली हे। अपने कहली हल कि हम भाई-भतीजावाद न करम ।'

मुखियाजी तुरन्त जवाब देलन—'राधा देवी हम्मर भाई आउ भतीजा न हथ।'

रामदीन उठ के तड़ाक से कहलन—'का महाराज ! आउ कहावे ला मरइत हऽ, ऊ अपनहीं के न औरत हथन ?'

मुखियाजी फिर कहलन—भाई लोग ! अपने वादा से मुकरीं मत। अपने लोग कहली हल कि भाई-भतीजा न होवे के चाहीं। अपने लोग ई कहाँ कहली हल कि पत्नी न होवे के चाहीं।'

गाँव के आम जनता फेर में पड़ गेलन। फिर लइका से दुसरका पुरजा निकाले ला कहल गेल। गाँव के लोग ई विचार पर अड़ल हलन कि पत्नी के नाम पर विरोध करवा देम। फिर लचार होके दुसरके व्यक्ति उम्मीदवार हो जायत। गाँव के तरफ से अवाज आयल कि दुसरका पुरजा पढ़ल जाय। सरदारजी दुसरका पुरजा पढ़लन—ओकरा पर लिखल हल अनुराधा देवी।

नाम सुनइते गाँव के आम जनता के बोलिये बन्द हो गेल, काहे कि अनुराधा देवी मुखियाजी के दुसरकी पत्नी हलन।

बैठक से उठइत-उठइत रामाधार मिसिर आम जनता से कहलन—'अपने लोग के कहनानुसार मुखिया पद के योग्य उम्मीदवार राधा देवी भेलन जे अपने लोग के सब सर्त्त पूरा करइत हथ। अपने लोग अप्पन वादा निभाईं आउ योग्य मुखिया के जिताईं।'

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कहानीकार दिलीप कुमार के परिचय चार वाक्य में दऽ ।

   (ख) रामाधार मिसिर मुखिया के रूप में गाँव में कउन-कउन काम करके देखा देलन ?

   (ग) झगरू मियाँ रामाधार मिसिर के का जवाब देलन ?

   (घ) झगरू मियाँ के बात सुनके रामाधार मिसिर का सफाई देलन ?

   (ङ) रामदीन मिटिंग में जे कहलन, ऊ आज के समय में केतना उचित हे ? पाँच वाक्य में तर्क देके समझावऽ।

लिखित :

1. सरदार जी के कथन तोरा कइसन लगल ? तीन वाक्य में समझावऽ।
2. रामाधार मिसिर मौन काहे रहलन ?
3. राधा देवी के दू गो बिसेसता बतावऽ ।
4. तोर विचार से मुखिया में कउन-कउन गुन होवे के चाहीं ?
5. रामाधार मिसिर के चरित्र-चित्रन करऽ !
6. ई कहानी में आउ कउन-कउन मुख्य पात्र हे ? ओकरा बारे में एक-एक वाक्य लिखऽ !
7. सप्रसंग व्याख्या करऽ :—

   हमनी के मुखिया चोर-चुहाड़ न रहतन। मुखिया गरीब घर के इंसान आउ इज्जतदार रहत जे आम जनता के चैन से रहे देत।

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से पाँच गो तत्सम सब्द चुन के लिखऽ।
2. ई सब मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करऽ :—
   पानी-पानी होना, चैन से रहना, तरवा के लहर कपार पर चढ़ना, बोलती बन्द होना, घोटाला करना

योग्यता-विस्तार :

1. अगर तूँ मुखिया बन जयबऽ, तब समाज में परिवर्तन लावेला कउन-कउन काम करके देखयबऽ ?
2. आज पंचायती राज सफल हे कि फेल ? समझा के लिखऽ।
3. देस के विकास में पंचायत के का भूमिका हो सकऽ हे ? एकरा पर लेख लिखऽ।
4. कहानी के सिल्प के आधार पर 'योग्य मुखिया' के समीक्षा करऽ !

सब्दार्थ :

नोमिनेसन	— नाम देना
उलह गेल	— सूख के टेढ़ा हो गेल
समर्पित	— सौंपना
लेथारल गेल	— लजावल गेल
कहनानुसार	— कहे के मोताबिक
उपेक्षित	— गदानल न गेल / बिना ध्यान के
सौभाग्यसाली	— अच्छा भाग्यवाला
दुर्बल	— कमजोर

●●●